वो लड़का जिसने पक्षियों के चित्र बनाए

जॉन जेम्स ऑडोबोन

की कहानी

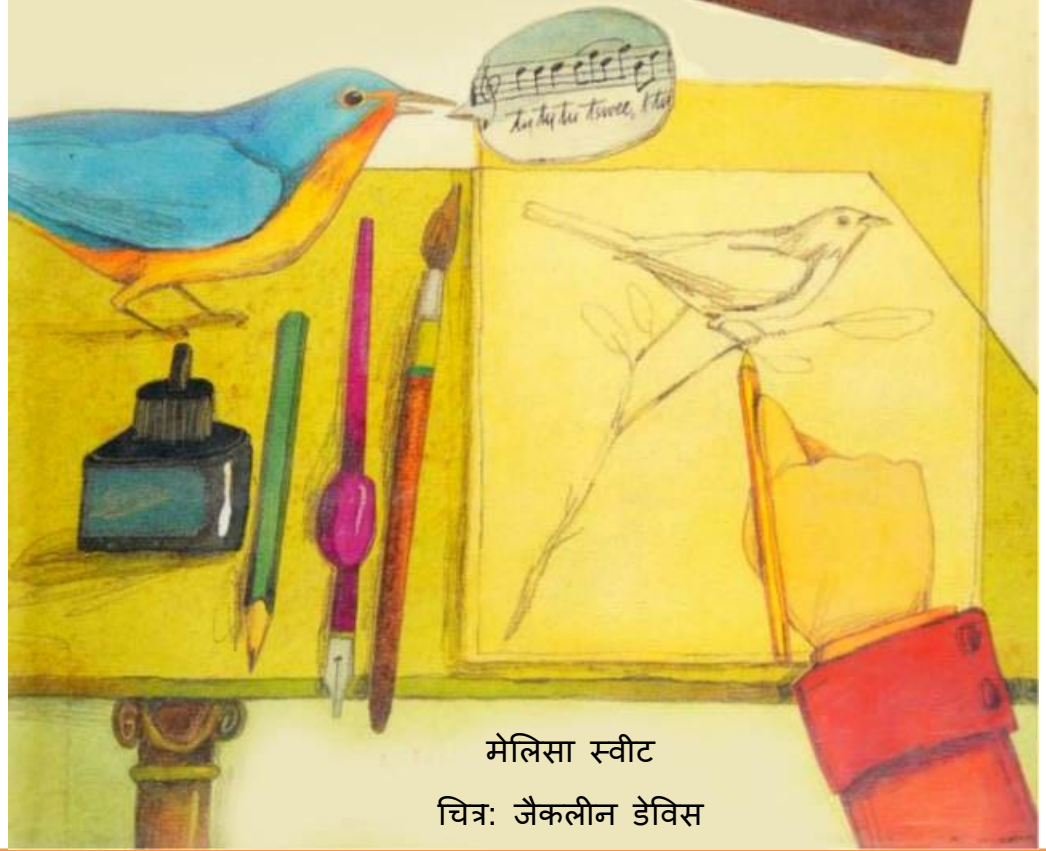

मेलिसा स्वीट

चित्र: जैकलीन डेविस

जॉन जेम्स ऑडोबोन एक ऐसा लड़का था जिसे घर के अंदर रहने से ज्यादा बाहर का वातावरण पसंद था. वो एक ऐसा लड़का था जो सिर्फ किताबों से नहीं, बल्कि प्रकृति में पक्षियों का अध्ययन करने में विश्वास रखता था. और, 1804 के पतझड़ में, वो एक लड़का था जो यह जानने के लिए दृढ़ संकल्प था कि क्या उसके पेंसिल्वेनिया घर के पास घोंसले बनाने वाले छोटे पक्षी, वास्तव में अगले वसंत में वहाँ वापस आएंगे या नहीं?

सदियों और पतझड़ में छोटे पक्षियों का गायब होना और वसंत ऋतु में उनका वापस लौटना एक रहस्य था. पक्षियों ने अपनी सर्दियाँ कहाँ बिताईं? और जब वे वापस लौटे, तो क्या वे सचमुच उन्हीं घोंसलों में वापस लौटे?

यह पुस्तक बताती है कि कैसे युवा ऑडोबोन ने पक्षियों के बारे में हमारी समझ बढ़ाने के लिए आवश्यक काम किये. अमेरिका के पक्षियों के महानतम चित्रकार के शुरुआती जुनून को दर्शाते हुए, यह कहानी युवा पाठकों को अपने घरों के पास पक्षियों को निहारने और उनकी आवाज़ को ध्यान से सुनने के लिए भी प्रेरित करेगी.

वो लड़का जिसने पक्षियों के चित्र बनाए

जॉन जेम्स ऑडोबोन की कहानी

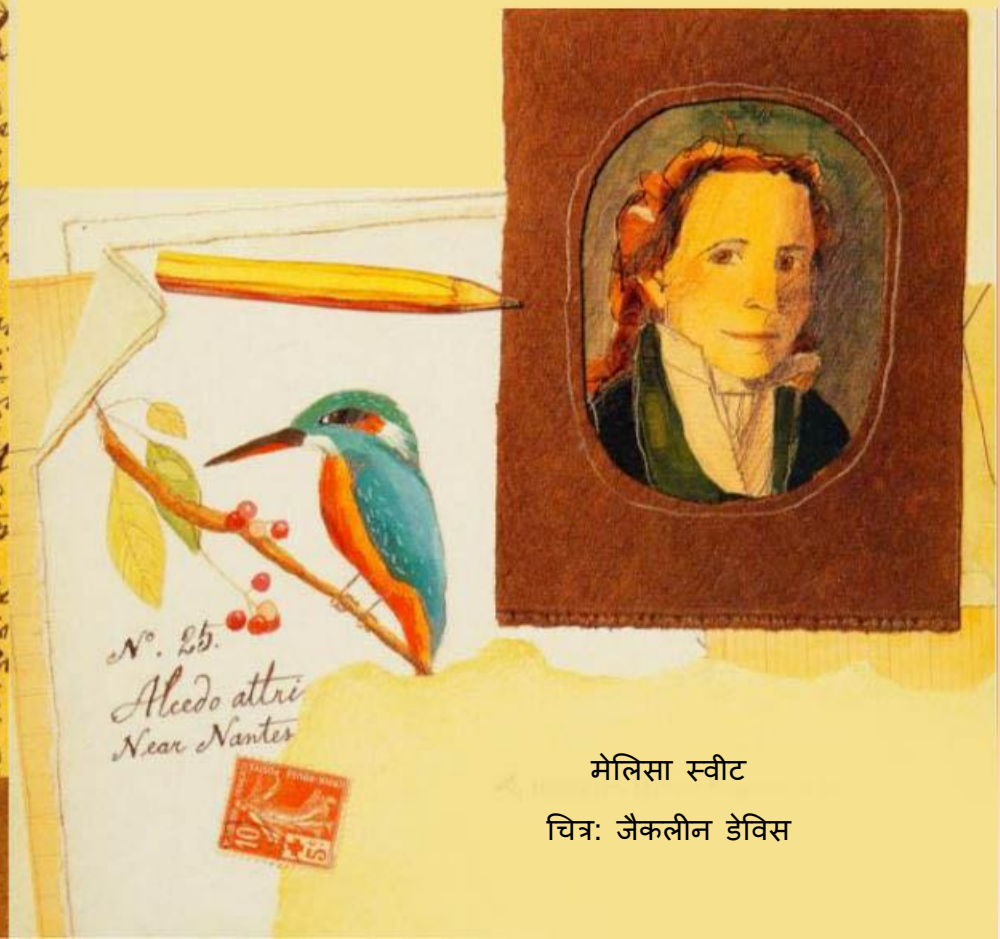

मेलिसा स्वीट

चित्र: जैकलीन डेविस

यह सच था कि जॉन जेम्स अधिकांश लड़कों की तुलना में बेहतर स्केटिंग, शिकार और सवारी कर सकता था. यह भी सच था कि वो मिनुएट और गावोटे नृत्य कर सकता था जैसे कि वो एक राजा पैदा हुआ हो. वो सारंगी बजा सकता था, वो प्रेम कर सकता था, और वो तलवार से लड़ाई कर सकता था. लेकिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक उसे जो सबसे ज्यादा अच्छा लगता था, वो था पक्षियों को देखना.

जॉन जेम्स की सबसे सुखद यादें फ्रांस में अपने घर के पास अपने पिता के साथ जंगल की सैरों की थीं. इन सैरों में पापा ऑडोबोन पक्षियों के बारे में बात करते थे. उनके सुंदर रंग, उनकी सुंदर उड़ान, और सबसे अद्भुत - हर पतझड़ में उनका रहस्यमय ढंग से गायब होना, उसके बाद वसंत ऋतु में उनका वफादारी से वापस आना.

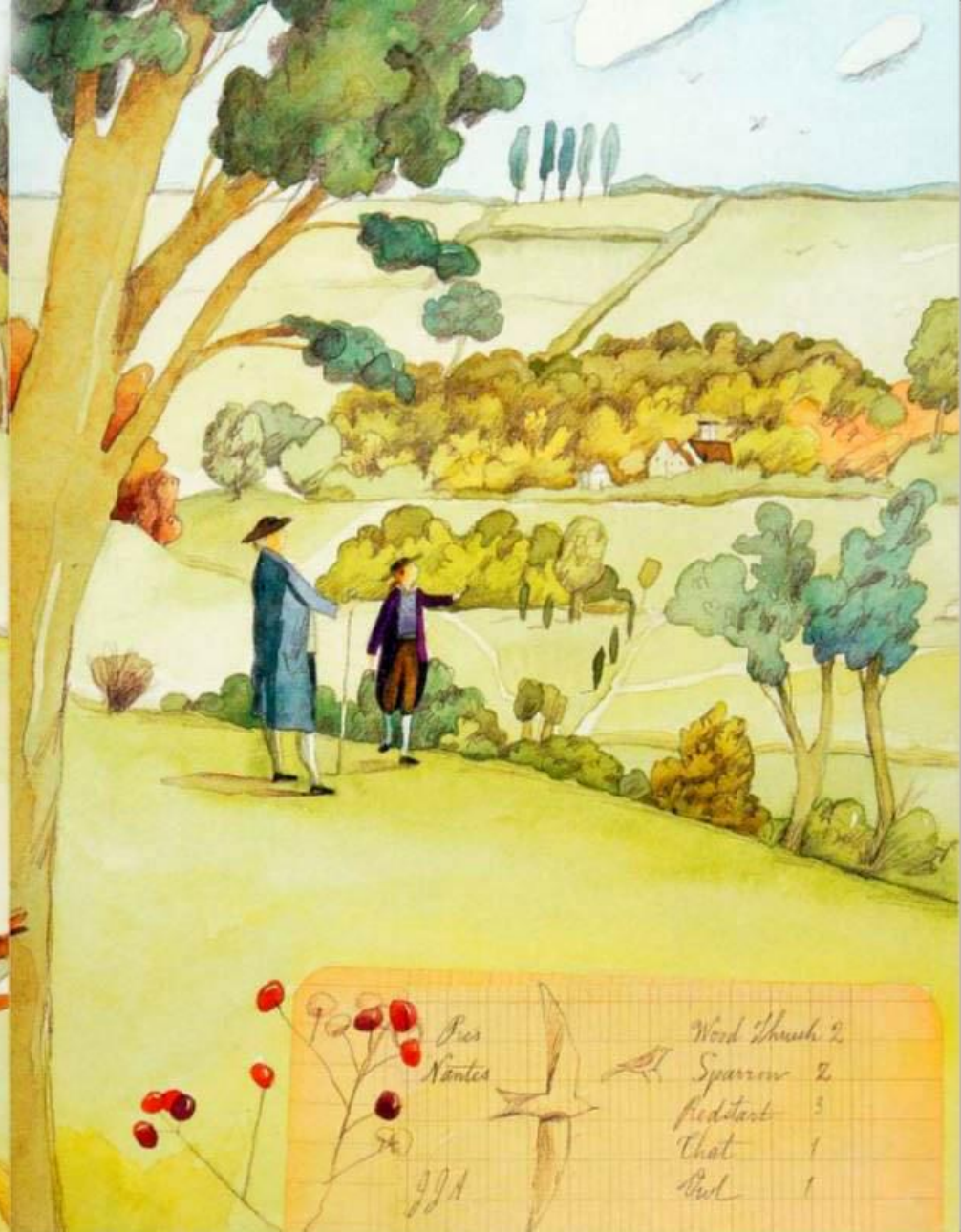

लेकिन अब जॉन जेम्स अठारह साल का हो गया था और अब वो अपने पिता से चार हजार मील दूर पेंसिल्वेनिया, अमरीका के जंगलों में अकेले रहने चला गया था. केवल छह महीने पहले ही उसके पिता ने उसे जहाज़ पर बिठाया था. जहाज, जॉन जेम्स को अमेरिका ले गया, जहां उसे खाड़ी के किनारे एक फार्महाउस में रहना था. पिता ने उसे अंग्रेजी सीखने, वाणिज्य सीखने, और अमेरिका में कैसे पैसा कमाया जाता है यह सीखने के लिए उसे अमरीका भेजा था. लेकिन मुख्यतः उन्होंने अपने इकलौते बेटे को इसलिए अमरीका भेजा था ताकि जॉन जेम्स को नेपोलियन के युद्ध में लड़ना न पड़े. जॉन जेम्स आश्चर्य कर रहा था कि क्या वो अपने पिता को कभी दोबारा देख पाएगा.

पेंसिल्वेनिया में वो अप्रैल का महीना था, और गहरे गड्ढों में अभी भी बर्फ के टुकड़े तैर रहे थे. जॉन जेम्स ने बर्फीले नाले को पार किया. वो किनारे तक गया और फिर एक चूना पत्थर की गुफा के पास पहुंचा. वो अचरज कर रहा था कि आज उसे क्या मिलेगा. उसे बस वो प्यू पक्षी का एक खाली घोंसला दिखा, जिसे उसने पिछले पाँच दिन पहले खोजा था. क्या वहां कुछ होगा....

फबी, फबी, फबी! पंखों की फड़फड़ाहट ने जॉन जेम्स का स्वागत किया. प्यू फ्लाईकैचर पक्षी वापस आ गए थे.

फिर एक मादा पक्षी धनुष से निकले तीर की तरह गुफा से बाहर उड़ गई. नर पक्षी, जो बड़ा और गहरे रंग का था ने जॉन जेम्स के सिर के ऊपर अपने पंख फड़फड़ाए और अपनी चोंच से आवाज़ की:
क्लॉक! क्लॉक! क्लॉक!

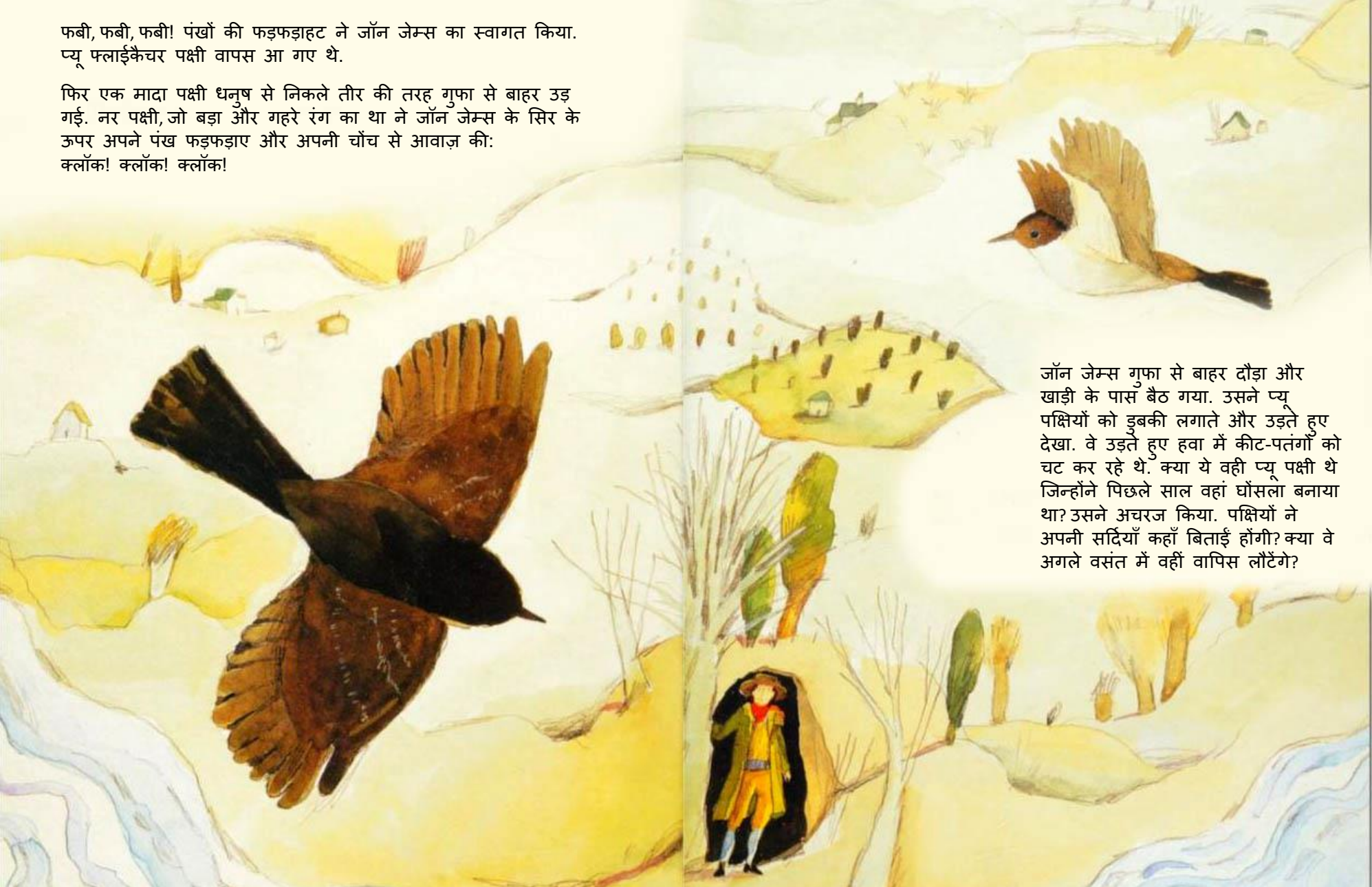

जॉन जेम्स गुफा से बाहर दौड़ा और खाड़ी के पास बैठ गया. उसने प्यू पक्षियों को डुबकी लगाते और उड़ते हुए देखा. वे उड़ते हुए हवा में कीट-पतंगों को चट कर रहे थे. क्या ये वही प्यू पक्षी थे जिन्होंने पिछले साल वहां घोंसला बनाया था? उसने अचरज किया. पक्षियों ने अपनी सर्दियाँ कहाँ बिताईं होंगी? क्या वे अगले वसंत में वहीं वापिस लौटेंगे?

जॉन जेम्स जंगल के रास्ते घर भागा. "मैडम थॉमस! मैडम थॉमस!" वो अपने फार्महाउस की रसोई में घुसते हुए चिल्लाया. उत्साह में, "लल वाई ए डेस ऑरजेउक्स!" उसके यह शब्द फ्रेंच में थे.

मिसेज़ थॉमस उसकी हाउसकीपर थीं जिन्हें पापा ऑडोबोन ने, अपने अमेरिकी फार्महाउस मिल-ग्रोव की देखभाल के लिए नियुक्त किया था. मिसेज़ थॉमस ने जॉन जेम्स के गंदे जूतों की ओर अपना लंबा लकड़ी का चम्मच घुमाया, और उन्हें तुरंत उतारा और सूखने के लिए आग के पास रख दिया.

"पक्षी," जॉन जेम्स ने कहा. "मुझे पक्षी दिखे. दो सुंदर पक्षी गुफा में हैं!"

मिसेज़ थॉमस ने अपनी भौंहें चढ़ाई. वो उस ऊर्जावान फ्रांसीसी लड़के को चाहती थीं. और वो यह भी जानती थीं कि वो अपने जनून को लेकर पागल था. पक्षी! हमेशा पक्षी! सुबह उठने से लेकर रात को आँखें बंद करने तक, वो केवल पक्षियों के बारे में ही सोचता था. उसकी उम्र के लड़के के लिए वो बड़ी अजीब बात थी.

"मास्टर ऑडोबोन," मिसेज़ थॉमस ने डांटते हुए कहा, "तुम खेती पर ज्यादा ध्यान दो और पक्षियों का पीछा करना छोड़ दो. भगवान के लिए तुम्हारे लिए वही सबसे लिए अच्छा होगा."

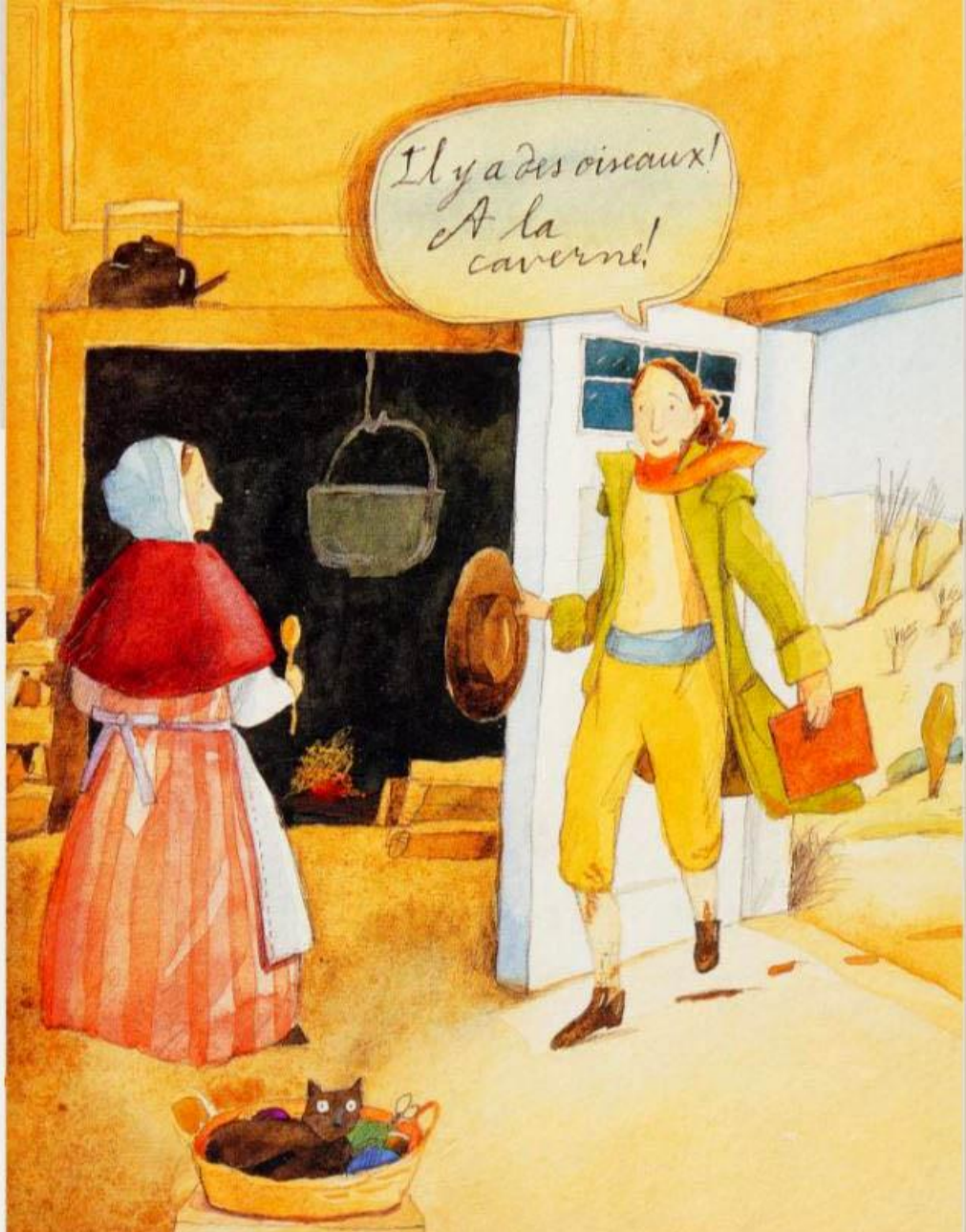

लेकिन जॉन जेम्स ने, उनकी बात न सुनने का नाटक किया. वो सीधे अपने अटारी वाले कमरे में चढ़ गया - वो उसे अपना पसंदीदा कमरा बुलाता था. वहाँ पर हर शेल्फ, हर टेबलटॉप, फर्श का हर इंच, घोंसलों और अंडों, पेड़ की टहनियों, पत्थरों और लाइकेन और पक्षियों के पंखों और स्टफ्ड पक्षियों: रेडविंग्स और ग्रैकल, किंगफिशर और कठफोड़वा आदि से ढका हुआ था. दीवारें पेंसिल और क्रेयॉन से पक्षियों के चित्रों से ढकी हुई थीं, सभी चित्रों पर "JJA" के हस्ताक्षर थे. हर साल अपने जन्मदिन पर, जॉन जेम्स इन चित्रों की - अपने पूरे साल के काम की समीक्षा करता था और फिर उन्हें चिमनी में जला देता था! उसे उम्मीद थी कि किसी दिन वो उनसे बेहतरीन और सँजोकर रखने लायक चित्र बना पाएगा.

जॉन जेम्स अपनी किताबों की अलमारी के पास गया जहाँ पर प्राकृतिक इतिहास की किताबें थीं जो उसे अपने पिता से उपहार में मिली थीं. सर्दियों में छोटे पक्षी कहाँ रहते हैं? हर वसंत में क्या वे अपने पुराने घोंसलों में वापस आते हैं? जिन वैज्ञानिकों ने ये पुस्तकें लिखीं वे भी इस बात पर एकमत नहीं थे; प्रत्येक के अलग-अलग विचार थे.

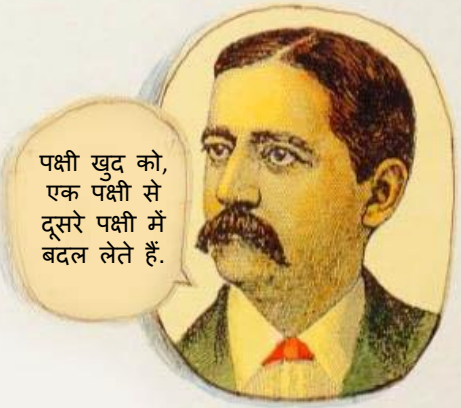

आज से दो हजार वर्ष पहले यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने इन प्रश्नों के उत्तर दिये थे. अरस्तू ने कहा कि हर पतझड़ में सारस के बड़े झुंड दक्षिण की ओर उड़ते थे और वसंत ऋतु में लौटकर वापिस आते थे. लेकिन उनका मानना था कि छोटे पक्षी प्रवास नहीं करते थे. अरस्तू ने लिखा, छोटे पक्षी पूरी सर्दियों में पानी के नीचे या खोखले लट्ठों में शीतनिद्रा में सोते रहते थे.

उस समय के कई वैज्ञानिक अभी भी अरस्तू से सहमत थे. उनके अनुसार छोटे पक्षी खुद को एक बड़ी गेंद में इकट्ठा कर लेते थे, वे चोंच से चोंच, पंख से पंख और पैर से पैर पकड़े हुए, अपनी पूरी सर्दियां पानी के नीचे जमे हुए पड़े रहते थे. मछुआरों ने भी ऐसे पक्षियों को अपने जाल में फंसाने की कहानियां सुनाईं.

लेकिन जॉन जेम्स को कभी भी पानी के नीचे उलझे हुए पक्षी नहीं मिले. पर जॉन जेम्स ने वैज्ञानिकों की हर बात पर विश्वास नहीं किया. क्यों? उनमें से कुछ का मानना था कि पक्षी हर सर्दी में, एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति में बदल जाते थे! और एक वैज्ञानिक ने दावा किया कि पक्षी प्रत्येक पतझड़ में, चंद्रमा की यात्रा करते थे और वसंत ऋतु में लौट आते थे. उनके अनुसार उस यात्रा में पक्षियों को साठ दिन लगते थे!

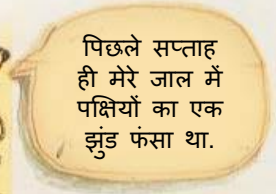

जॉन जेम्स ने कभी भी कक्षा के अंदर ज्यादा समय नहीं बिताया था, और वो स्कूल की हरेक परीक्षा में फेल हुआ था. लेकिन वे खुद को एक प्रकृतिवादी मानता था. उसने पक्षियों की आदतों और तरीकों को जानने के लिए प्रकृति में पक्षियों का गहरा अध्ययन किया.

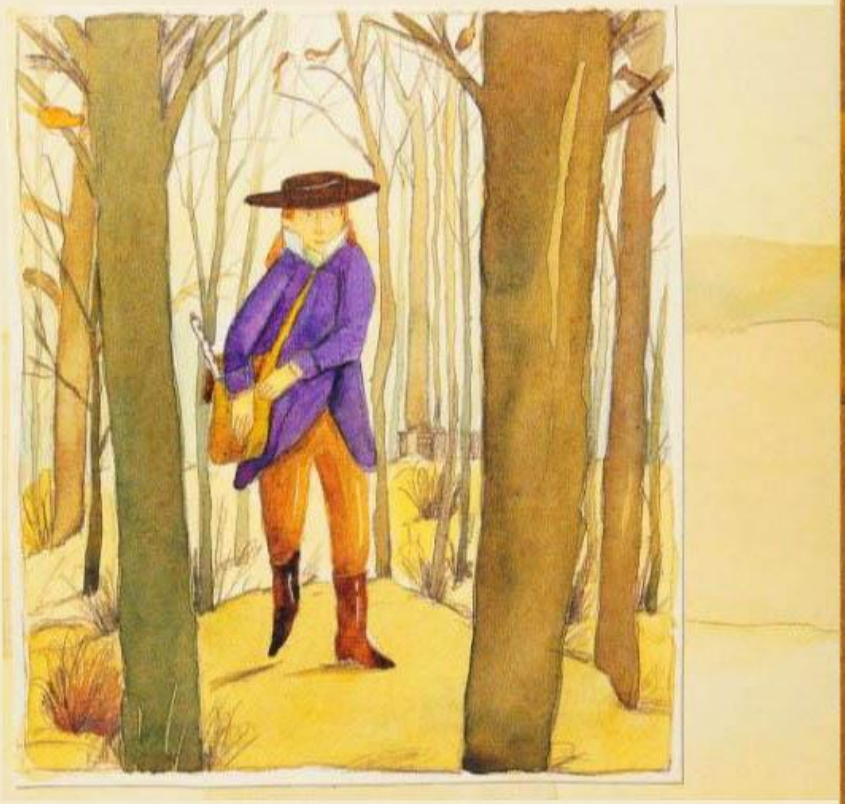

मैं अपनी किताबें गुफा में ले जाऊंगा, जॉन जेम्स ने फैसला किया. और साथ में अपनी पेंसिलें और कागज़ भी. मैं अपनी बांसुरी भी वहां ले जाऊंगा. मैं हर दिन अपनी गुफा में पक्षियों का अध्ययन करूंगा. मैं उन्हें वैसे ही चित्रित करूंगा जैसे वे हैं. और क्योंकि वो एक ऐसा लड़का था जिसे घर के अंदर से ज्यादा बाहर का माहौल कहीं अधिक पसंद था, इसलिए उसने बस वही किया.

एक सप्ताह में पक्षी जॉन जेम्स के अभ्यस्त हो गए. पक्षियों ने उसे इस तरह नज़रअंदाज कर दिया मानो वो पुराना पेड़ का कोई ठूंठ हो. जब वो अपनी पेंसिलों से चित्र बनाता होता तो पक्षी अपनी चोंचों के गीली मिट्टी के टुकड़े लाते थे. जब वो कोई फ्रेंच कहानी पढ़ रहा होता तो पक्षी हरी काई लेकर आते थे. वो अपनी बांसुरी पर धुन बजाता था और पक्षी खाड़ी के किनारे से, घोंसला बनाने के लिए हंस के पंख इकट्ठे करते थे.

जल्द ही पक्षियों का सूखा भूरा घोंसला मुलायम हरे बिस्तर में बदल गया. इस बीच जॉन जेम्स ने पक्षियों की आवाज की नकल करना सीख लिया: फ़ी-बी! फ़ी-बी!

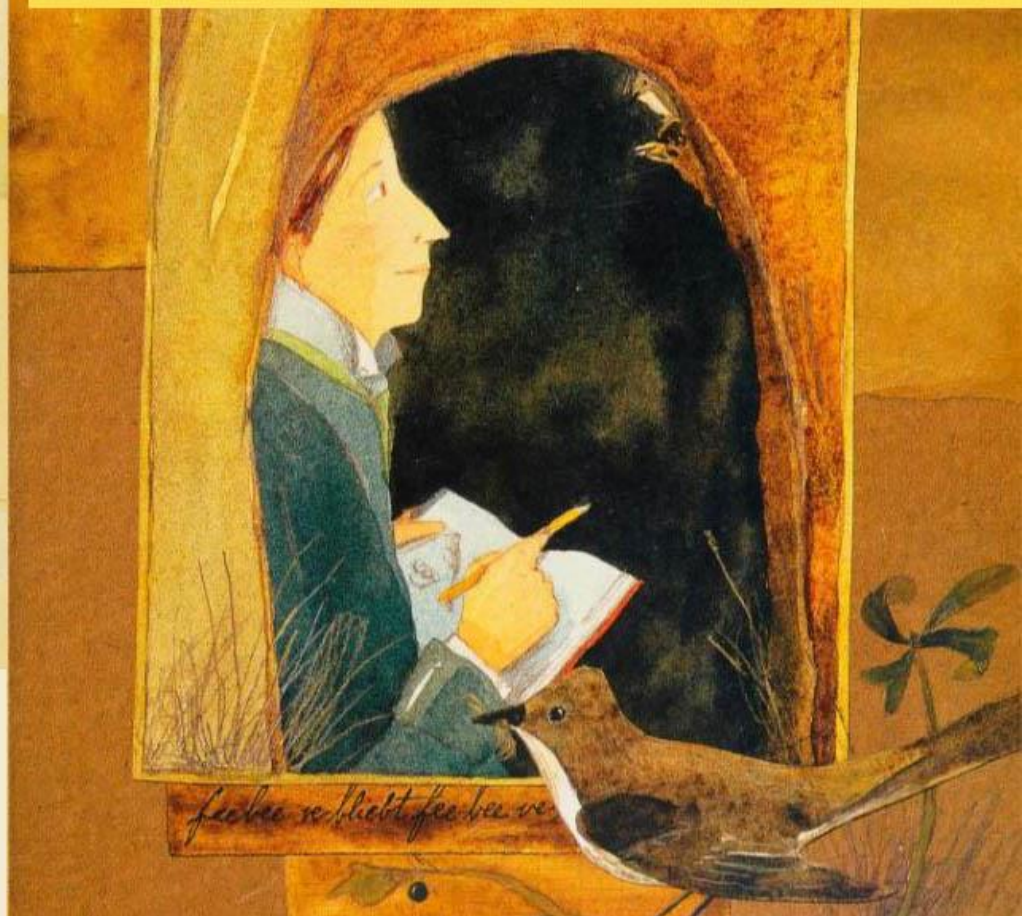

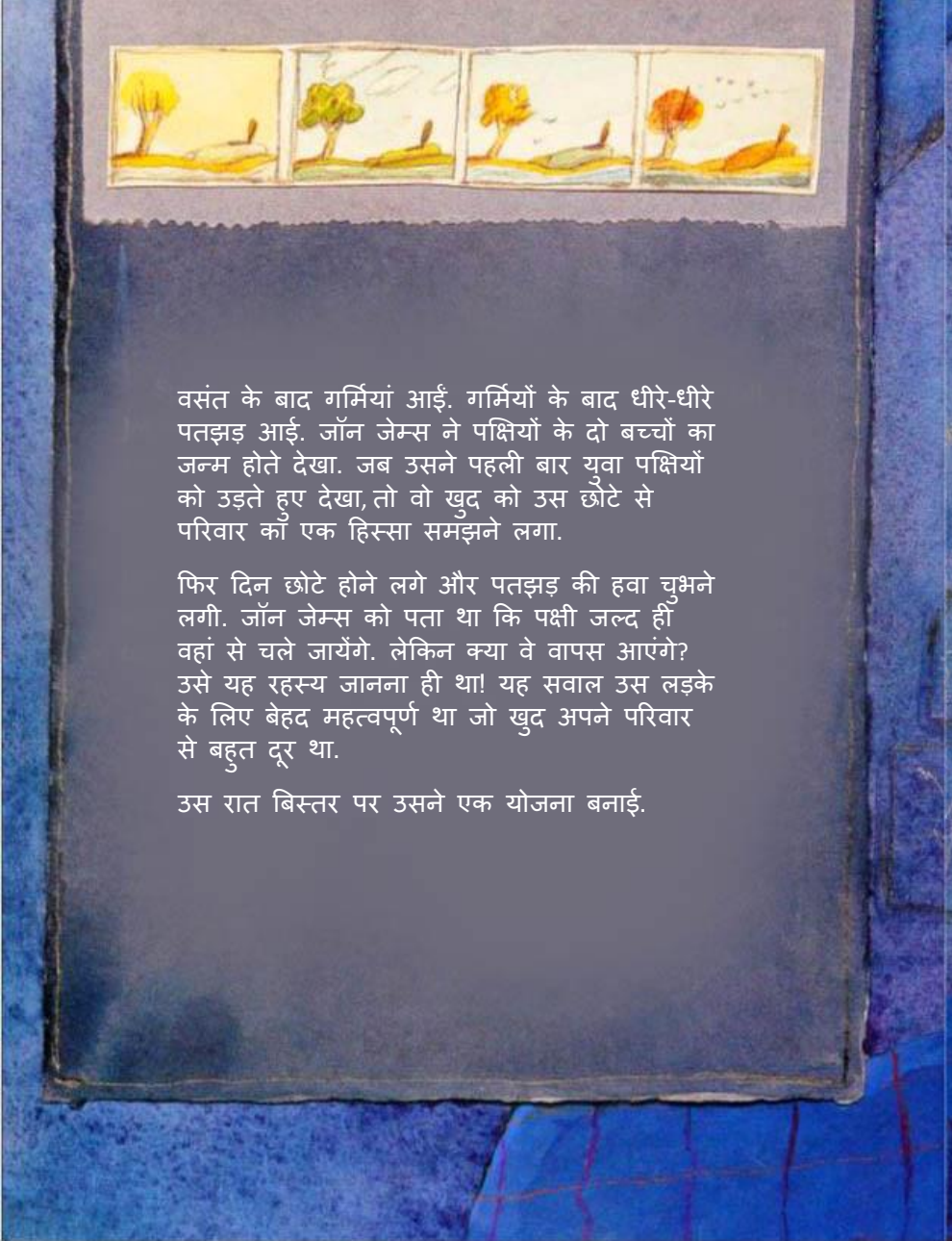

वसंत के बाद गर्मियां आईं. गर्मियों के बाद धीरे-धीरे पतझड़ आई. जॉन जेम्स ने पक्षियों के दो बच्चों का जन्म होते देखा. जब उसने पहली बार युवा पक्षियों को उड़ते हुए देखा, तो वो खुद को उस छोटे से परिवार का एक हिस्सा समझने लगा.

फिर दिन छोटे होने लगे और पतझड़ की हवा चुभने लगी. जॉन जेम्स को पता था कि पक्षी जल्द ही वहां से चले जायेंगे. लेकिन क्या वे वापस आएंगे? उसे यह रहस्य जानना ही था! यह सवाल उस लड़के के लिए बेहद महत्वपूर्ण था जो खुद अपने परिवार से बहुत दूर था.

उस रात बिस्तर पर उसने एक योजना बनाई.

अगले दिन, जब माँ और पिता पक्षी, घोंसले से दूर थे तब जॉन जेम्स ने पक्षियों में से एक बच्चे को उठाया. उसने मध्यकालीन राजाओं के बारे में पढ़ा था जो अपने इनामी बाज़ों के पैरों में बैंड (धागे) बांधते थे ताकि खोया हुआ बाज़ वापस मिल सके. यह पता लगाने के लिए कि पक्षी कहाँ जाता है, क्या किसी जंगली पक्षी के पैर में बैंड या धागा बाँधा जा सकता था? वो काम पहले कभी नहीं किया गया था, लेकिन जॉन जेम्स वो कोशिश कर सकता था.

उसने अपनी जेब से एक डोरी निकाली और उसे पक्षी के बच्चे के पैर के चारों ओर ढीली बांधी. पक्षी ने चोंच मारकर डोरी तोड़ डाली. अगले दिन उसने पक्षी के पैर में एक और डोरी बाँधी. फिर, पक्षी ने चोंच मारकर डोरी निकाल दी. अंत में, जॉन जेम्स पाँच मील चलकर निकटतम गाँव तक गया और वहां से उसने चाँदी के महीन धागों से बुनी हुई एक डोरी खरीदी. वो धागा मुलायम और मजबूत था. फिर उसने प्रत्येक शिशु पक्षी के एक पैर में चांदी की डोर एक टुकड़ा ढीला बाँधा.

एक सप्ताह बाद, पक्षी चले गए.

खाड़ी का पानी अब जम चुका था. और हर बार जब जॉन जेम्स खाली गुफा के पार स्केटिंग करता, तो वो दो हजार साल पुराने उस सवाल के बारे में सोचता था: छोटे पक्षी कहाँ जाते हैं और क्या वे वसंत ऋतु में अपने पुराने घोंसले में लौटकर वापिस आते हैं?

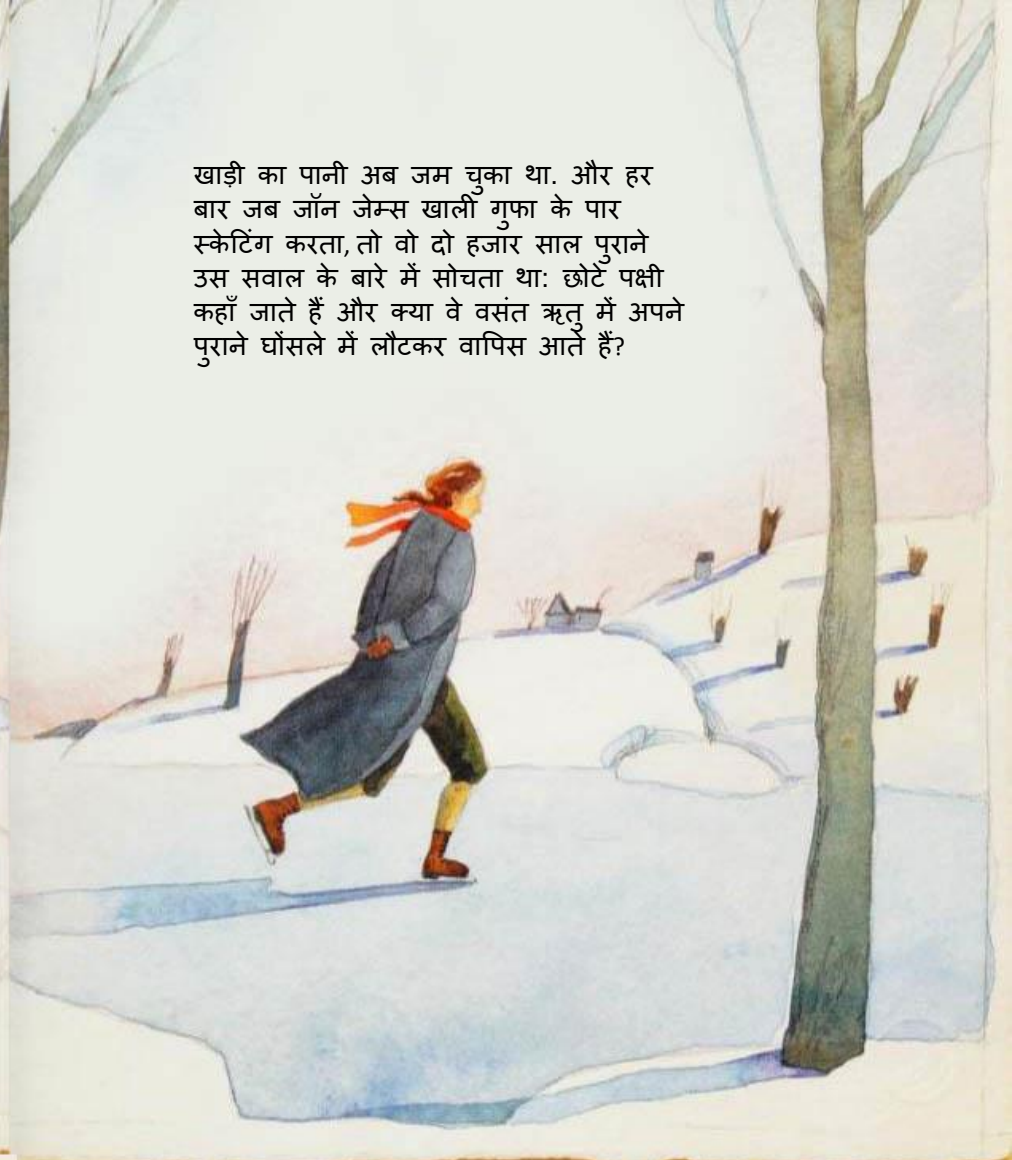

सारी सर्दियों में जॉन जेम्स ने अपने प्रिय संग्रहालय में काम करता रहा और उसने गुफा में बनाए गए पेंसिल रेखाचित्रों में रंग भरा. उसे उम्मीद थी कि उसके अगले जन्मदिन पर उसके पास आग से बचाने लायक एक या दो सुन्दर चित्र ज़रूर होंगे.

धीरे-धीरे दिन बड़े होने लगे. खाड़ी पर बर्फ टूट कर पिघलने लगी.

एक सुबह, जॉन जेम्स ने एक पक्षी की आवाज़ सुनी, फ़ी-बी! फ़ी-बी!

वो तुरंत गुफा की ओर भागा. अपना सिर झुकाकर वो गुफा में अंदर घुसा.

पर कोई भी मादा पक्षी धनुष से निकले तीर की तरह गुफा से बाहर नहीं उड़ी. किसी भी नर पक्षी ने जॉन जेम्स के सिर के ऊपर अपने पंख नहीं फड़फड़ाए और चोंच से आवाज़ नहीं की. उसकी बजाय, पक्षियों ने जॉन जेम्स को इस तरह नज़रअंदाज कर दिया जैसे कि वो पुराने पेड़ का कोई ठूंठ हो. पक्षियों को गुफा के अंदर और बाहर उड़ते हुए देखकर, जॉन जेम्स को पता चल गया कि उसके पुराने दोस्त वापस लौट आए थे.

लेकिन पिछले साल के बच्चे, जो अब बड़े हो गए होंगे, वे कहाँ थे? क्या वे भी लौट आए थे? वो उनकी पुकार सुनकर आस-पास के जंगलों और बागों में उनकी खोजबीन करने लगा.

बाहर घास के मैदान में, एक घास के छप्पर के अंदर, उसने दो पक्षियों को घोंसला बनाते हुए पाया. एक के पैर में चाँदी का धागा बंधा था.

नदी के ऊपर, एक पुल के नीचे, उसे घोंसले में रहने वाले दो और पक्षी मिले. और वहां भी एक के पैर में चाँदी का धागा बंधा हुआ था.

जॉन जेम्स चिल्लाना चाहता था, "हाँ! पक्षी अपने उसी पुराने घोंसले में लौटकर आते हैं! और उनके बच्चे, उनसे पास में ही अपने घोंसले बनाते हैं." लेकिन उसकी बात शायद ही किसने सुनी हो? मैं अपने पिता को लिखूंगा, जेम्स ने फैसला किया. मैं उन्हें बताऊंगा कि मैंने अमेरिका में क्या-क्या सीखा. और जब मैं बड़ा हो जाऊंगा. मैं पूरी दुनिया को अपनी खोज बताने का एक तरीका ढूंढूंगा. फिर वो अपनी पेंसिल, कागज और बांसुरी इकट्ठा करने के लिए वापस अपने घर की ओर भागा जैसे ही वो भागा, उसने पुकारा, "फ़ी-बी' फ़ी-बी'"

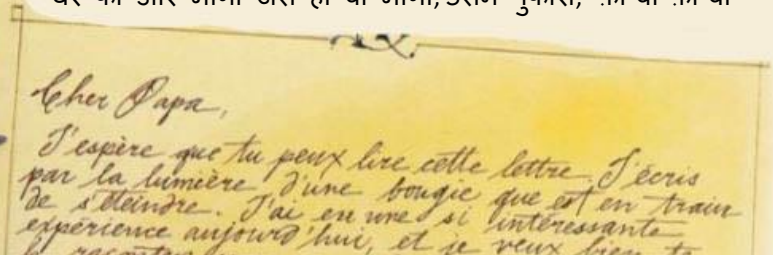

जॉन जेम्स ऑडुबॉन के बारे में

किसी पक्षी के पैर में धागा या बैंड बांधना—अर्थात्, पक्षी की गति पर नज़र रखने के लिए उसके पैर के चारों ओर कोई निशानी बांधना—ऑडोबोन के समय में बिल्कुल एक अभिनव और नया विचार था. दरअसल, 1804 में जॉन जेम्स उत्तरी अमेरिका में किसी पक्षी पर डोरी बांधने वाले पहले व्यक्ति बने. उनके सरल प्रयोग ने एक जटिल सिद्धांत को साबित करने में मदद की: कई पक्षी हर साल एक ही घोंसले में लौटते थे, और उनकी संतानें पास में अपना घोंसला बनाती थीं. इस व्यवहार को "होमिंग" (घर वापिस आना) कहा जाता है. बाकी दुनिया को ऑडोबोन के प्रयोग के बारे में तब पता चला जब उन्होंने इसके बारे में अपनी पुस्तक "ऑर्निथोलॉजिकल बायोग्राफी" में लिखा. बाद में, बीसवीं सदी में, वैज्ञानिकों ने यह साबित करने के लिए बर्ड-बैंडिंग का इस्तेमाल किया और यह स्थापित किया छोटे पक्षी भी प्रवास करते थे.

इस पुस्तक की कहानी समाप्त होने के कुछ ही समय बाद, जॉन जेम्स फ्रांस में अपने पिता के घर लौटे. शायद, पक्षियों की तरह, उन्हें भी घर की ओर खिंचाव महसूस हुआ होगा. लेकिन एक साल बाद, वो अपने "जीवन मित्र" पापा ऑडोबोन को अलविदा कहकर वापस अमेरिका चले गए. यह आखिरी बार था जब उन्होंने अपने पिता को देखा.

युवा जॉन जेम्स दुनिया भर में पक्षियों के सबसे महान चित्रकार बने. वो पक्षियों के आदमकद चित्र बनाने वाले, पक्षियों को शिकार करते हुए, खुदको संवारते हुए, लड़ते और उड़ते हुए दिखाने वाले पहले व्यक्ति बने. उनकी क्रांतिकारी पेंटिंग्स ने दो तरह के दर्शकों को प्रसन्न किया - वैज्ञानिक को, जो उनकी पेंटिंग्स की सटीकता और बारीकी से आकर्षित थे, और सामान्य लोग, जिन्होंने उनके पक्षियों की सुंदरता का आनंद लिया.

ऑडोबोन ने अपनी गुफा के पक्षियों के सैकड़ों रेखाचित्र बनाए, लेकिन उनमें से कोई भी चित्र जिंदा नहीं बचा. उन्होंने 1825 के आसपास लुइसियाना में प्यू फ्लाईकैचर (जिसे पूर्वी फोएबे कहा जाता था) को वाटरकलर से चित्रित किया.

लेखक का स्रोत नोट

इस कहानी को लिखने में, मैंने मुख्य रूप से "ऑर्निथोलॉजिकल बायोग्राफी" और शर्ली-स्ट्रेशिंस्की की पुस्तक "ऑडुबॉन: लाइफ एंड आर्ट इन द अमेरिकन वाइल्डरनेस" पुस्तकों को अपना आधार बनाया. इस कहानी में शामिल लगभग हर विवरण इन दो पुस्तकों में लिखा है. ऑडोबोन ने अपने जन्मदिन पर अपने कई शुरुआती चित्र जलाए. उन्होंने चांदी का धागा कहां से खरीदा, यह अटकलों का विषय है, लेकिन ऑडोबोन नियमित रूप से निकटतम गांव नॉरिस्टाउन तक पांच मील पैदल चलकर जाते थे. और यह लगभग निश्चित है कि मिसेज़ थॉमस एक शांत क्वेकर थीं, और शायद उनकी अपनी सिलाई की टोकरी में चांदी का धागा रखा हो. क्या ऑडोबोन ने अरस्तू के लेखों को पढ़ा? इस पर प्रश्नचिह्न लगाया जा सकता है. पापा ऑडोबोन को उपहार के रूप में किताबें देना बहुत पसंद थीं और यह संभव है कि उन्होंने अपने बेटे को जो प्राकृतिक इतिहास की किताबें दीं, शायद उनमें से एक पुस्तक में पक्षी प्रवास और हाइबरनेशन पर प्राचीन यूनानी सिद्धांत भी शामिल हों.

चित्रकार का स्रोत नोट

मिल-ग्रोव, पेंसिल्वेनिया में वो घर
और ज़मीन थी जहां यह कहानी घटी थी.
अब वो ऑडोबोन वन्यजीव अभयारण्य का हिस्सा है.
मैंने वहां पेंटिंग्स देखते हुए कुछ दिन बिताए. मैं वहां आसपास जंगल में घूमा और मैंने पक्षियों के कुछ चित्र भी बनाए. वहां के प्रशासक और क्यूरेटर एलन गेह्रेट ने धैर्यपूर्वक मेरे सवालों का जवाब दिया और मुझे मूल दस्तावेज़ दिखाए. उसके लिए उनका धन्यवाद. बाद में मैं हैंडेसन, केंटुकी स्थित, जॉन जेम्स ऑडोबोन स्टेट पार्क भी गया. वहां के संग्रहालय में ऑडोबोन के जीवन से जुड़ी कई अन्य कलाकृतियां और कलाएं मुझे देखने को मिलीं. वहां के क्यूरेटर डॉन बोर्मन को मेरे शोध में मदद के लिए धन्यवाद. मैंने पक्षी गीतों की पहचान एफ. शूयलर मैथ्यूज द्वारा लिखित "फील्ड बुक ऑफ वाइल्ड बर्ड्स एंड देयर म्यूजिक" से की.

जो प्रभाव मुझ पर पड़े वे आश्चर्यजनक रूप से सरल थे. ऑडोबोन की कला से आश्चर्यचकित न होना किसी के लिए भी कठिन होगा, लेकिन उनकी लिखावट का तरीका और उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले हस्तनिर्मित कागजों की गुणवत्ता, मेरी पेंटिंग और कोलाज का शुरुआती आधार बनी. यह कला ट्विन-रॉकर हस्तनिर्मित कागजों और प्राचीन कागजों पर, वाटर-कलर और गौचे, कलम और स्याही, पेंसिल, और कोलाज के साथ बनाई गई थी.